इसबार क्यों खास है सावन का चारों सोमवार, हर सोमवार का है ऐसा विशेष महत्व

शिव को श्रावण का सोमवार विशेष रूप से प्रिय है। श्रावण में भगवान आशुतोष का गंगाजल व पंचामृत से अभिषेक करने से शीतलता मिलती है। भगवान शिव की हरियाली से पूजा करने से विशेष पुण्य मिलता है। खासतौर से श्रावण मास के सोमवार को शिव का पूजन बेलपत्र, भांग, धतूरे, दूर्वाकुर आक्खे के पुष्प और लाल कनेर के पुष्पों से पूजन करने का प्रावधान है।

शिव को श्रावण का सोमवार भक्ति पूर्वक शिव की पूजा करने से कार्य क्षेत्र एवं जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आने वाली बाधाओं का निवारण होता है। जीवन पर आने वाले संकट टल जाते हैं।

इसके अलावा पांच तरह के जो अमृत बताए गए हैं उनमें दूध, दही, शहद, घी, शर्करा को मिलाकर बनाए गए पंचामृत से भगवान आशुतोष की पूजा कल्याणकारी होती है। भगवान शिव को बेलपत्र चढाने के लिए एक दिन पूर्व सायंकाल से पहले तोडकर रखना चाहिए। सोमवार को बेलपत्र तोडकर भगवान पर चढाया जाना उचित नहीं है। भगवान आशुतोष के साथ शिव परिवार, नंदी व भगवान परशुराम की पूजा भी श्रावण मास में लाभकारी है। शिव की पूजा से पहले नंदी की पूजा की जानी चाहिए। सावन के महीने में सोमवार का विशेष महत्व होता है। इसे भगवान शिव का दिन माना जाता है। इसलिए सोमवार के दिन शिव भक्त शिवालयों में जाकर शिव की विशेष पूजा अर्चना करते हैं। इस वर्ष सावन के महीने में चार सोमवार है। इन चारों सोमवार का अपना विशेष महत्व है।

सावन का पहला सोमवार शुभ योग लेकर आया है। इस दिन धृति योग बन रहा है। माना जाता है कि इस योग में भगवान शिव की पूजा करने से बाधाओं से मुक्ति मिलती है और योजनाओं को पूरा करने में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं। धृति योग के विषय में माना जाता है कि इस योग में जन्म लेने वाले बच्चे धैर्यवान और ज्ञानी होते हैं। इस योग में अगर कोई काम शुरू करेंगे तो कार्य लंबे समय तक चलता रहेगा। इसलिए नया व्यवसाय और लंबी अवधि की योजनाओं को शुरू करने के लिए सावन का पहला सोमवार उत्तम है।

सावन का दूसरा सोमवार भी व्रज योग लेकर आ रहा है। इस दिन व्रज नामक योग बन रहा है। इस दोनों योगों के कारण सावन का दूसरा सोमवार विशेष फलदायक बन गया है। इस दिन भगवान शिव की पूजा से बल एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त करें। इस सोमवार के दिन भगवान शिव को भांग, धतूरा एवं शहद अर्पित करना उत्तम फलदायी रहेगा।

सावन का तीसरा सोमवार साध्य योग लेकर आ रहा है। इस योग को साधना और भक्ति के लिए उत्तम माना गया है। शिव भक्त इस दिन भगवान शिव के मंत्रों का जप करके मंत्र सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। माना जाता है कि साध्य योग में भगवान शिव की पूजा करने से कठिन कार्य भी आसानी से बन जाता है।

सर्वोत्तम है सावन का चौथा सोमवार

सावन का चौथा सोमवार का महत्व और भी बढ गया है। इस दिन आयुष्मान योग एवं सौभाग्य योग भी बन रहा है। इस शुभ योग में भगवान शिव की पूजा करने से दांपत्य जीवन में आपसी प्रेम और सहयोग बढता है। आर्थिक परेशानियों में कमी आती है तथा जीवन पर आने वाले संकट से भगवान शिव रक्षा करते हैं।

शास्त्रों के अनुसार सावन के महीने में प्रदोष व्रत के दिन खासतौर पर सोमवार भी हो तो शिव की पूजा करने से अन्य दिनों की अपेक्षा कई गुणा पुण्य प्राप्त होता है। इस दिन भक्ति पूर्वक शिव की पूजा करने से शत्रुओं पर विजय मिलती है। कार्य क्षेत्र एवं जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आने वाली बाधाओं का निवारण होता है। जीवन पर आने वाले संकट टल जाते हैं।

सावन के महीना में सोमवार और शुक्रवार की बहुत महत्ता है इस दिन लक्ष्मीजी की पूजा करने से देवी लक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है। सावन का महीना मूल रूप से शिव और शक्ति के युग्म का महीना है अर्थात पौरुष और प्रकृति का मिलन। ये माह शक्ति और शिव साधना हेतु सर्वोत्तम माना गया है। शक्ति के अनेक रूपों में जगत माता महालक्ष्मी का सर्वोच्च स्थान है।

इस तरह सावन में पडने वाले शुक्रवार को किये गए इन उपायों से धन की कमी नहीं होती

धर्म शास्त्रों के अनुसार सावन के शुक्रवार विशेष फलदाई होती है क्योंकि यह तिथि माता पार्वती को समर्पित है। इस दिन विधि-विधान पूर्वक पूजा करने से सभी सुखों की प्राप्ति होती है।

सावन के महीना में सोमवार और शुक्रवार की बहुत महत्ता है इस दिन लक्ष्मीजी की पूजा करने से देवी लक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है।

सावन का महीना मूल रूप से शिव और शक्ति के युग्म का महीना है अर्थात पौरुष और प्रकृति का मिलन।

ये माह शक्ति और शिव साधना हेतु सर्वोत्तम माना गया है। शक्ति के अनेक रूपों में जगत माता महालक्ष्मी का सर्वोच्च स्थान है।

लक्ष्मी के आठ स्वरूपों में से धन लक्ष्मी का स्थान हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। सावन के शुक्रवार को इन सरल उपायों से आपके संचित धन में वृद्धि होगी।

लक्ष्मी की कृपा व धन प्राप्त करने हेतु बडी-बडी तांत्रिक साधनाएं प्राचीनकाल से ही संपूर्ण विश्व में प्रचलित रही हैं। धर्म में लक्ष्मी पूजन के साथ ही कई प्रकार के यन्त्रों व मंत्रों की साधना प्राचीनकाल से होती रही है।

श्रावण मास के शुक्रवार पर धन लक्ष्मी के पूजन का बडा महत्व है। लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने हेतु श्रावण मास में भक्तगण अनेकों प्रकार से पूजन करते हैं।

देवी लक्ष्मी किए गए विधिवत पूजन से जल्दी प्रसन्न होती हैं व प्रसन्न होकर भक्तों की इच्छा पूर्ण करती हैं। श्रावण मास के समस्त शुक्रवार व्रत करने से पूरे साल भर घर परिवार धन धान्य से भरा रहता है।

इस दिन प्रसाद के रूप में जल, दूध, दही, शहद, घी, चीनी, जनेऊ, चंदन, बिल्वगिरि, कमलगट्टा, धूप, दीप और दक्षिणा के साथ लक्ष्मी जी का पूजन किया जाता है। रात्रिकाल में घी व कपूर सहित धूप की आरती करके लक्ष्मी का गुणगान किया जाता है। सदगृहस्थ नौकरी पेशा या व्यापारी को श्रावण शुक्रवार व्रत करने से धन धान्य और लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

ऐसे करें सावन शुक्रवार पूजा

शुक्रवार के दिन संध्या के समय सफेद कपडें पहनें, किसी शिवालय में जाकर अथवा घर में रखे पारद शिवलिंग का पूजन करें।

शुद्ध घी का दीपक जलाएं, गुलाबी फूल अर्पित करें। गुलाब की अगरबत्ती जलाएं। सफेद चंदन अर्पित करें। इत्र अर्पित करें। शक्करपारे चढाएं। इसके पश्चात सफेद चंदन अथवा कमलगट्टे की माला से उत्तर दिशा की ओर मुख करके 108 बार इस मंत्र का जाप करें। इस सरल उपाय से आपका धन निश्चित रूप से संचित होगा। इस साधना से घर-परिवार में सुख-समृद्धि रहती है। सावन में यदि रोज भगवान शिव की पूजा धर्म शास्त्रों के अनुसार बताए गए विधि-विधान से की जाए तो भक्त के सभी संकट दूर हो जाते हैं और सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात।

धर्म शास्त्रों के अनुसार सावन के शुक्रवार विशेष फलदाई होती है क्योंकि यह तिथि माता पार्वती को समर्पित है।

इस दिन भगवान शंकर तथा माता पार्वती के मंदिर में जाकर उन्हें भोग लगाने तथा विधि-विधान पूर्वक पूजा करने से सभी सुखों की प्राप्ति होती है। 7 दिन तक लाल वस्त्र दान करने से भगवान शिव व पार्वती प्रसन्न होते हैं।

शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढाने से पहले ज़रूर करें

भगवान शिव पर अर्पित करने हेतु बिल्व पत्र तोडने से पहले निम्न मंत्र का उच्चारण करने के उपरांत बिल्व वृक्ष को प्रमाण करना चाहिए, उसके बाद बिल्व पत्र तोडने चाहिए। बिल्व पत्र तोडने का मंत्र- अमृतोद्भव श्रीवृक्ष महादेवप्रिय: सदा।

गृहामि तव पत्राणि शिपूजार्थमादरात। चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथियों को, संक्रांति के समय और सोमवार को बिल्व पत्र कभी नहीं तोडने चाहिए, किंतु बिल्व पत्र शंकर जी को बहुत प्रिय हैं। अत: निषिद्ध समय से पहले दिन का रखा बिल्व पत्र ही चढाना चाहिए। बिल्व पत्र, धतूरा और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें भगवान पर चढाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपर की ओर होता है, अत: चढाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिए।

दूर्वा एवं तुलसी दल को अपनी ओर और बिल्व पत्र नीचे मुख पर चढाना चाहिए। दाहिने हाथ की हथेली को सीधी करके मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल एवं बिल्व पत्र चढाने चाहिए। भगवान शिव पर चढे हुए पुष्पों एवं बिल्व पत्रों को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

शिवलिंग का पूजन करने से मनुष्य संतान, धन, विद्या, ज्ञान, व मोक्ष की प्राप्ति करता है

शिवलिंग के बारे में कहा जाता है कि जिस स्थान पर शिवलिंग का पूजन होता है,वह तीर्थ नहीं होते हुआ भी तीर्थ बन जाता है।

महाभारत में उल्लेख मिलता है कि 'जब पाण्डव वनवास में थे, तब दुर्योधन पाण्डवों को कष्ट देता था। कभी वह दुर्वासा ऋषि को भेजकर तो कभी मूक नामक राक्षस को भेजकर तब पाण्डवों ने श्री कृष्ण से दुर्योधन के दुर्व्यवहार के लिए कहा और उससे राहत पाने का उपाय पूछा।'तब श्री कृष्ण ने उन सभी को भगवान की पूजा के लिए सलाह दी और कहा 'मैंने सभी मनोरथों को प्राप्त करने के लिए प्रभू शिव की पूजा की है और आज भी कर रहा हूं। तुम लोग भी करो। वेदव्यासजी ने भी पाण्डवों को भगवान् शिव की पूजा का उपदेश दिया है।

शिवमहापुराण में वर्णित है कि शिव-पूजा से प्राप्त होने वाले सुखों का वर्णन निम्न प्रकार से है दरिद्रता, रोग सम्बन्धी कष्ट, शत्रु द्वारा होने वाली पीडा एवं चारों प्रकार का पाप तभी तक कष्ट देता है, जब तक शिव की पूजा नहीं की जाती। महादेव का पूजन कर लेने पर सभी प्रकार का दु:ख नष्ट हो जाता है, सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते है और अन्त में मुक्ति लाभ होता है। जो मनुष्य जीवन पाकर उसके मुख्य सुख संतान को प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें सब सुखों को देने वाले महादेव की

पूजा करनी चाहिए। ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र विद्यिवत शिवजी का पूजन करें। इससे सभी मनोकामनाएं सिद्ध हो जाती है। कहते हैं जो लोग किसी तीर्थ में मिट्टी के शिवलिंग बनाकर उनका विधि पूजन करते हैं वे शिव स्वरूप हो जाते हैं। जो मनुष्य तीर्थ में मिटटी,भस्म ,गोबर अथवा बालू का शिवलिंग बनाकर एक बार भी उसका विधि पूजन करता है। वह दस हजार कल्प तक स्वर्ग में निवास करता है। शिवलिंग का विधि पूर्वक पूजन करने से मनुष्य संतान,धन,धन्य,विद्या,ज्ञान, सद्बुधी, दीर्घायु, और मोक्ष की प्राप्ति करता है।

शिवलिंग के बारे में कहा जाता है कि जिस स्थान पर शिवलिंग का पूजन होता है,वह तीर्थ नहीं होते हुआ भी तीर्थ बन जाता है। जिस स्थान पर शिवलिंग का पूजन होता है,उस स्थान पर जिस मनुष्य की मृत्यु होती है। वह शिवलोक को प्रप्त करता है।

सावन मे किये गए इन उपायों से शिव अति प्रसन्न होते हैं, पर ये बिल्कुल ना करें

सावन शिव का मास है सावन में किये गए इन उपायों से शिव अति प्रसन्न होते हैं । व्यक्ति की कुंडली के सभी ग्रह दोष दूर हो जाते हैं। उसका बुरे से बुरा समय भी टल जाता है।

सावन शिव का मास है सावन में किये गए इन उपायों से शिव अति प्रसन्न होते हैं । महालक्ष्मी की कृपा पाने, धन समृद्धि प्राप्त करने के लिए एक बहुत प्राचीन उपाय बताया गया है, वह है रोज रात में शिवलिंग के पास दीपक लगाना। रात के समय जब घोर अंधेरा रहता है, तब शिवलिंग के निकट दीपक का प्रकाश करने से महादेव अतिप्रसन्न होते हैं। मान्यता है कि जो भी व्यक्ति रोज रात में किसी सिद्ध शिव मंदिर जाकर वहां शिवलिंग के पास दीपक जलाता है, उसे सभी देवी-देवताओं की कृपा प्राप्त होती है और उसके जीवन में किसी भी चीज की कमी नहीं रहती है। इस उपाय को नियम से करने पर व्यक्ति की कुंडली के सभी ग्रह दोष दूर हो जाते हैं। उसका बुरे से बुरा समय भी टल जाता है।

इस उपाय के संबंध में शास्त्रों में एक कथा बताई गई है।

शास्त्रों के अनुसार प्राचीन काल में देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर देव अपने पिछले जन्म में चोर थे। वे एक रात भगवान शिव के मंदिर में चोरी करने पहुंच गए। रात की वजह से वहां काफी अंधेरा था। अंधेरे में उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। तब उन्होंने चोरी करने के लिए एक दीपक जलाया। दीपक के प्रकाश में वह मंदिर का सामान की चोरी कर ही रहे थे कि हवा से दीपक बुझ गया। उन्होंने पुन: दीपक जलाया लेकिन वह फिर हवा से बुझ गया, यह प्रक्रिया कई बार हुई। रात के समय बार-बार दीपक जलाने से भगवान शंकर उनसे अति प्रसन्न हो गए। कुबेर देव ने चोरी करते समय बार-बार दीपक जलाकर अनजाने में ही जो शिवजी की पूजा की थी, इसके फलस्वरूप भगवान भोलेनाथ ने उन्हें अगले जन्म में देवताओं का कोषाध्यक्ष बना दिया। इसीलिए शास्त्रों के अनुसार जो भी व्यक्ति रात के समय शिव मंदिर में शिवलिंग के निकट प्रकाश करता है, उसे प्रभु शंकर की विशेष कृपा प्राप्त हो जाती है। इसलिए सभी मनुष्यों को जीवन में सभी तरह के संकटों के निवारण के लिए शिवलिंग के निकट रात्रि में शुद घी का दीपक जलाना चाहिए। सावन भर सभी शिव भक्तों को भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए बेलपत्र और शमी पत्र अवश्य ही चढाने चाहिए । इस संबंध में एक पौराणिक कथा है एक बार 88 हजार ऋषियों ने परम पिता ब्रहमा से भगवान महादेव को प्रसन्न करने की विधि पूछी तब प्रसन्न होकर ब्रहमाजी ने बताया कि भगवान शिव सौ कमल चढाने से जितने प्रसन्न होते हैं, उतना ही एक नीलकमल चढाने पर प्रसन्न होते हैं। इसी तरह एक हजार नीलकमल के बराबर एक बेलपत्र से और एक हजार बेलपत्र चढाने के फल के बराबर एक शमी पत्र से प्रसन्न होते है।

भगवान शिव को कभी भी हल्दी नहीं चढाई जाती है और उन्हें शंख से जल भी नहीं चढाना चाहिए। हिन्दु धर्म शास्त्रों के अनुसार ये दोनों काम शिव पूजा में वर्जित बताये गए हैं। वैसे धार्मिक कार्यों में हल्दी का बहुत महत्व है। लेकिन हल्दी, शिवजी के अतिरिक्त अन्य सभी देवी-देवताओं को चढाई जाती है। चूँकि हल्दी सौंदर्य प्रसाधन में उपयोग की जाती है और शिवलिंग पुरुषत्व का प्रतीक है, इसी कारण से भगवान भोलेनाथ को हल्दी नहीं चढाई जाती है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए उन्हें सफेद वस्त्र अर्पित करने चाहिए ।

सावन माह में दूध, घी, दही और गाय के दान से भगवान शंकर शीघ्र ही प्रसन्न होते है । इसलिए अपने जीवन में सर्वत्र सफलता के लिए इन चीजो का दान अनिवार्य रूप से करना चाहिए ।

भगवान शिव सफेद रंग के फूलों से विशेषकर सफेद कमल से जल्दी प्रसन्न होते हैं। भगवान शंकर को धतूरे के पुष्प, हरसिंगार, व नागकेसर के सफेद पुष्प, सूखे कमल गट्टे, कनेर, कुसुम, आक, कुश आदि के पुष्प चढाने का विधान है। भगवान शंकर को धतूरे का फूल सबसे अधिक प्रिय है। इसके अलावा इनको बेलपत्र और शमी पत्र चढाना बहुत ही शुभ माना जाता है।

लेकिन भगवान शिव जी को सेमल, कदम्ब, अनार, शिरीष , माधवी, केवडा, मालती, जूही और कपास के पुष्प नहीं चढाये जाते है ।

सावन शिव का मास है सावन में किये गए इन उपायों से शिव अति प्रसन्न होते हैं । महालक्ष्मी की कृपा पाने, धन समृद्धि प्राप्त करने के लिए एक बहुत प्राचीन उपाय बताया गया है, वह है रोज रात में शिवलिंग के पास दीपक लगाना।

नागपंचमी के दिन ऐसे करें पूजा, इन बातों का रखें ध्यान

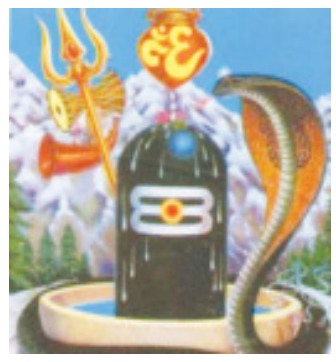

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार पृथ्वी को नागदेवता अपने सिर पर रखे हुए हैं। नाग देवता की पूजा का सिलसिला सदियों से चला आ रहा है। नाग देवता की पूजा करने से कई प्रकार के कुंडली में होने वाले दोषों से बचा जा सकता है। इसके लिए नागदेवता की पूरी विधि विधान से पूजा करनी चाहिए।

नागपंचमी के दिन ऐसे करें पूजा

इस दिन नागदेव के दर्शन अवश्य करना चाहिए। नाग देवता की बांबी (नागदेव का निवास स्थान) की पूजा करना चाहिए। नागदेवता पर दूध चढा सकते हैं। उन्हें सुगंधित पुष्प व चंदन से ही पूजा करनी चाहिए। नाग पूजन के लिए सेंवई-चावल आदि ताजा भोजन बनाएं। कुछ भागों में नागपंचमी से एक दिन पहले ही भोजन बना कर रख लिया जाता है और नागपंचमी के दिन बासी (ठंडा) खाना खाया जाता है। नागदेवता की दही, दूर्वा,कुशा, गंध, अक्षत, पुष्प, जल, कच्चा दूध, रोली और चावल आदि से पूजन कर सेंवई व मिष्ठान से उनका भोग लगाते हैं। इसके बाद आरती करके कथा का सुनना चाहिए।